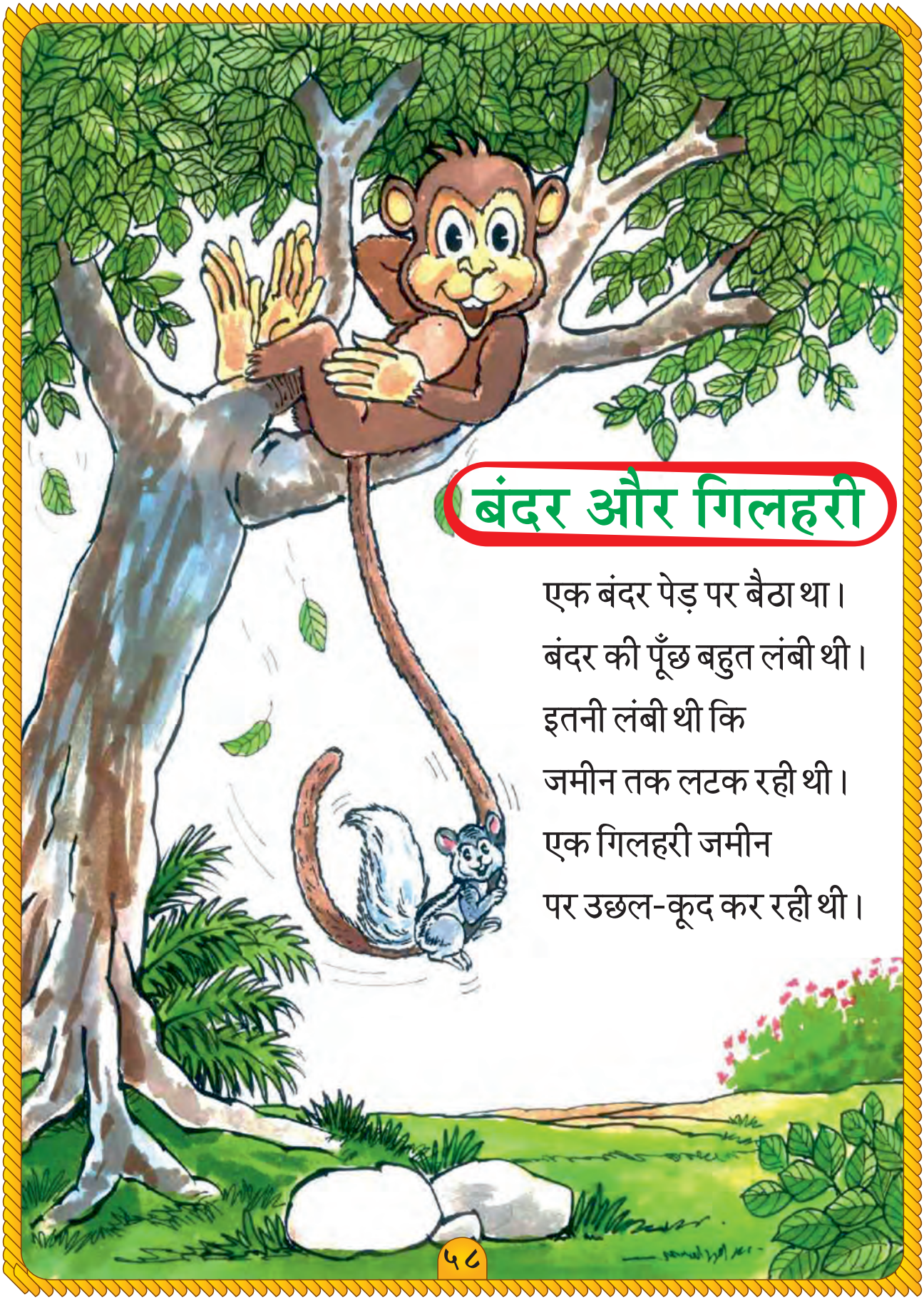

बंदर और गिलहरी

एक बंदर पेड़ पर बैठा था।
बंदर की पूँछ बहुत लंबी थी।
इतनी लंबी थी कि
जमीन तक लटक रही थी।
एक गिलहरी जमीन
पर उछल-कूद कर रही थी।

अचानक उसे पूँछ दिखाई दी। उसने सोचा - यह झूला कहाँ से आ गया ? थोड़ी देर पहले तो नहीं था। वह पूँछ पर चढ़कर झूलने लगी। बंदर को गुदगुदी हुई। उसने नीचे देखा। वह हँस कर बोला- बहन गिलहरी ! यह क्या कर रही हो ? मुझे गुदगुदी हो रही है। गिलहरी चौंकी- बंदर भैया, यह तुम हो ? मैं तो तुम्हारी पूँछ को झूला समझकर झूल रही थी। बड़ा मजा आ रहा था।

और गिलहरी हँसती हुई पेड़ की डाली पर चढ़ गई।